डॉ0 तारादत्त निर्विरोध

गोरी हथेली पर	बिम्ब कहां उतरेंगे?
ऊँची पहाड़ी पर खेल रहा बाल रवि कमसिन पहाड़िन की गोरी हथेली पर घेर में किरणों के उछल रहा जैसे गोद ममता की लेने खिलौने को शिशु हो मचल रहा उलझे हैं तार–तार प्रेम की पहेली पर पंछियों के नीड़ों में उग आया शोर चढ़ रही है ''सीढ़ियां'' पर्वत की ओर यौवन का रंग चढ़ा निर्जन के गांव की गूंगी सहेली पर।	उजली रेखाओं के सांवरे चितेरे बिम्ब कहां उतरेंगे तेरे सम्मुख हैं दरपनी अंधेरे छाया सी चल रही धूलिकण बुहारती सड़कों की भीड़ पांवों से छूट रहीं सतहें जुड़ने को आ जुड़े पंक्षियों के नीड़ जागने की एक रात, सोने को अनगिन सबेरे सठियाई बुद्धि के मिमियाते लोग साथ लिए कटुता की आग डसने को आतुर हैं कुण्डलियां मारे कुंठित अनुराग सर्पों से ज्यादा हैं जहरी सपेरे।
	सम्पर्क– 254, पद्मावती कालोनी–ए अजमेर रोड जयपुर–302019